* महर्षि दुर्वासा *

महर्षि दुर्वासा हादिविद्या के आदि आचार्य कहे गये हैं। प्रमाणस्वरूप 'सौन्दर्यलहरी' की- 'शिवः शक्तिः कामः क्षितिरथ रविः शीतकिरणः' इस श्लोक की लक्ष्मीधरा, अरुणामोदिनी, डिण्डिम भाष्य एवं कैवल्याश्रमकृत सौभाग्यवर्धनी व्याख्याएँ देखी जा सकती हैं। इन्हें त्रयोदशाक्षरी हादिविद्या का आचार्य कहा गया है। ये श्रीविद्या आदि शाक्तसाहित्य में सर्वत्र 'क्रोधभट्टारक' नाम से प्रसिद्ध हैं- 'तथा च क्रोध-भट्टारकः इतिक्रोधभट्टारकः' उक्तं च क्रोधभट्टारकेण' आदि से इनका संकेत हुआ है और इनके कथनों से विषय की सम्पुष्टि की गयी है।

श्रीचक्रकी विस्तृततम व्याख्यास्वरूप 'ललितास्तवरत्नम्' अपरनाम 'आर्याशती' इन्हीं की रचना की है। इसके अतिरिक्त इनके द्वारा रचित 'त्रिपुरसुन्दरीमहिम्नः स्तवः', 'अर्चना', 'त्रिंशिका', 'देवी-महिम्नः स्तव' आदि स्तोत्र भी सुप्रसिद्ध हैं। इन्होंने पाण्डव माता कुन्ती को श्रीविद्या के एक अङ्ग 'देवाकर्षिणी' या 'देवहूति' विद्या का उसके भविष्य का आकलन कर उपदेश दिया था।